जीवन का एक्स-रे...

सुख प्रत्यक्ष क्षण में है। प्रत्येक नयी प्रभात नये उज्जवल भविष्य को सूचित करती है, जिसमें प्रेम, संतोष, उल्लास और नि:स्वार्थ सेवा की लेन-देन कर सकते हैं। सूर्य की कोई भी किरण निराशा और हताशा के साथ आती है क्या? सूर्य की एक ही प्रतिज्ञा है, प्रकाश दान द्वारा मनुष्य के तन-मन को प्रकाशित करना।

जीवन के कौन से क्षेत्र में माफी का प्रायोजन नहीं...

मैं ज्ञानी हूँ, मैं ना-लायक हूँ, मैं अज्ञानी हूँ, मैं अमीर हूँ, मैं गरीब हूँ, मैं समर्थ हूँ, मैं कमज़ोर हूँ, मैं विजेता हूँ, मैं पराजित हूँ।

वास्तव में मनुष्य जग के साथ जितना घनिष्ठ नाता जोड़ता है, उतना खुद के साथ निकटता का नाता नहीं जोड़ता।

- ब्र. कु. गंगाधर

हम अपने ``मैं'' के रक्षक या भक्षक होकर जीते हैं।

किसने आपको ना-लायक बनाया? किसने आपको अज्ञानी बनाया? किसने आपको गरीब बनाया और लाचार बनाया?

जो जीवन को तुच्छ मानता है उसे जीवन का पुरस्कार कहाँ मिलेगा? तुच्छता को अपनायेंगे तो तुच्छकार ही मिलेगा!

हम दूसरों को क्षमादान करने में गौरव और शालीनता की अनुभूति करते हैं, लेकिन खुद को भी स्वयं को क्षमा का अधिकार है, इसके बारे में हम स्वस्थ चित्त से विचार करते हैं?

हम आनंद वितरक बनने के बजाय उदासी वितरक बनेंगे तो हममें आंतरिक प्रसन्नता कहाँ से प्रकट होगी? प्रसन्नता प्रकट करने के लिए ईश्वर ने हमें चेहरा दिया है, चेहरे पर मुस्कराहट और मधुर स्मित के भाव के झरने दिये हैं। हम मित्र या स्वजन को देखते हैं तो हर्षित होते हैं, स्मित बिखेरते हैं, लेकिन शत्रु को देखें तो मन में बैठे पुर्वाग्रह के विकृत भाव से धिक्कारते हैं, उसके प्रति हम स्मित बिखेरते हैं क्या? मन ही मन उनके प्रति कल्याण चाहते हैं क्या? मानवता मर जाती है तब....।

हर रोज़ खुद ही खुद को पूछना होगा कि - मुझसे मानवता विरुद्ध कोई कार्य हुआ है या नहीं? क्या मैंने विश्वासघात को अपना मित्र बनाया है? मैंने प्रेम किया है या प्रेम का नाटक? मैंने सस्ती लोकप्रियता का चोला तो नहीं पहना है? किसी ने मुझे खरीदा तो नहीं है या मैंने चतुराई से किसी को खरीदने की कोशिश की है?

मैंने अपने दु:ख के कारण या आवेश में आकर किसी के सुख को छीना तो नहीं है?

जीवन के हरेक क्षेत्र में श्रेष्ठ दिखाने की चाह हम रखते हैं। उत्तम अभिनेता, विशेष लेखक, उत्तम व्यवसायी, प्रख्यात खिलाड़ी, लेकिन हमने उत्तम मनुष्य के रूप में भूमिका उत्कृष्ट बनाकर बजाया है या नहीं, उस पर विचार करने की फुर्सत है या नहीं?

रोटी, कपड़ा और मकान, नौकरी और बैंक बैलेंस के अलावा भी बहुत कुछ ऐसा है जो आपको खुशी दे सकता है। फिर भी हम स्वयं खुद को हराते हैं, स्वीकारने योग्य का तिरस्कार और त्यागने योग्य को अपनाते हैं।

अब्राहम लिंकन के शब्दों में कहें तो - सुख, ये मन की स्थिति है। अपने आस-पास के भौतिक पदार्थों में खोजने पर भी नहीं मिलेगी। संपत्ति-प्रतिष्ठा या पद में सुख है ही नहीं। जो लोग ज़रूरत से ज़्यादा धन एकत्रित करने में संपूर्ण ज़िन्दगी को खर्च कर देते हैं, वे भ्रमित और हताश मनुष्य हैं। उन्हें जब समझ में आता है कि पैसा सुख का एक कण भी खरीद नहीं सकता, तब तक तो बहुत देर हो चुकी होती है। अभी हमारे पास जो कुछ भी है, उसके प्रति संतोष और कद्र रखना, यह उद्‌गार ही सुख है। सुख वर्तमान में है।

सुख प्रत्यक्ष क्षण में है। प्रत्येक नयी प्रभात नये उज्जवल भविष्य को सूचित करती है, जिसमें प्रेम, संतोष, उल्लास और निःस्वार्थ सेवा की लेन-देन कर सकते हैं। सूर्य की कोई भी किरण निराशा और हताशा के साथ आती है क्या? सूर्य की एक ही प्रतिज्ञा है, प्रकाश दान द्वारा मनुष्य के तन-मन को प्रकाशित करना। कभी सूर्य को हमने `थैन्क यू' - शेष पेज 8 पर

फरिश्ता बनना है तो पांव धरती पर न हो

सभी मिलकर जब ओम् शान्ति बोलते हैं तो अच्छा लगता है, बहुत खुशी होती है। वाह! वाह! डायमण्ड हॉल फुल है। अच्छा है। कितने प्यारे लगते हैं। अभी मैं क्या बताऊं मेरे दिल में क्या है? दिल में है दिलाराम। दिल में दिलाराम होने से सच्चाई और प्रेम है तो खुशी बहुत है। अभी हर मुरली में अव्यक्त मास का विशेष अभ्यास रोज़ाना मुरली के स्लोगन के बाद लिखा हुआ आता है, तो दिन भर में देखते हैं। चेहरा और चलन, यह ऑखें दिखाती हैं। बाबा ने ब्रह्मा तन से हमको पक्का ब्राह्मण सो देवता बनाने के लिए इतनी पालना, पढ़ाई दी हैं।

जब मुरली पढ़ते हैं तो क्या लगता है? मैं साक्षी होकर बोलती हूँ, जो भी बाबा हमारे से चाहता है, कोई भी परिस्थिति होती नहीं है जब स्वस्थिति है। अटेन्शन है तो टेन्शन से फ्री हैं। कोई टेन्शन की बात आई तो उसके आगे सिर्फ ए लगा दो तो कोई टेन्शन नहीं होगा। अटेन्शन है तो बाबा मेरा साथी है और साक्षी होकर के प्ले करो। यह पढ़ाई बहुत अच्छी है। या तो कहेंगे बाबा या कहेंगे ड्रामा! जैसे यह दो ऑखें हैं ना, तो दोनों ऑखों में बाबा और ड्रामा। हमारी दृष्टि में बाबा और ड्रामा ही समाया हुआ है। जब कोई भी हमारे से मिलते हैं तो सभी को देखके बहुत खुशी होती है। भले हॉल में कितने भी भाई बहनें बैठे हैं सभी का मन शान्त और खुश है। बाबा कहते हैं तो वर्सा भी याद आता है। क्या वर्से में मिला है? मुक्ति जीवनमुक्ति। जीवन में होते हुए भी न्यारे हैं, बाबा के प्यारे हैं। बाबा शिक्षक भी है, रक्षक भी है। वन्डरफुल है बाबा। जो आत्मायें डायरेक्ट परमात्मा से पालना लेते, पढ़ाई पढ़ते अपनी स्थिति पर ध्यान रखते हैं वो विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं क्योंकि बाबा को फॉलो करना है ना। ऐसों को देख मीठा बाबा, प्यारा बाबा, प्यार का सागर बन बहुत प्यार लुटाता है, प्रैक्टिकल देखते हैं। लगता है आप सब ज्ञान सागर, प्रेम के सागर में समाये हुए बैठे हो। वन्डरफुल बाबा, वन्डरफुल बाबा का ड्रामा।

दिन रात शान्ति की शक्ति का वातावरण, वायुमण्डल, वायब्रेशन फैलाना है। आजकल वायब्रेशन भी बहुत अच्छा दिलों को खींचता है। बाबा मिलन में क्या फायदा है? अटेन्शन है कि बाबा की दृष्टि लेने को मिलती है, बाबा क्या सुना रहे हैं, उस पर गहराई से ध्यान रहता है। बाबा ने कार्य करते निश्चिंत रहने का भी वरदान दिया हुआ है, यही तो फायदा है। तो मेरे दिल में क्या है, मन में क्या है, संस्कार में क्या है? मन-बुद्धि-संस्कार में दिनरात स्वप्न वा संकल्पों में भी बाबा और परिवार ही घूमता है। जिसको जो बनना है, जैसा बनना है वही पुरुषार्थ करेंगे, जब देवता बनेंगे सतयुग होगा तब नहीं ऐसा पुरुषार्थ कर सकेंगे। अन्दर में नशा चढ़ा हुआ है, आज ब्राह्मण हैं कल देवता बनेंगे। इसके पहले बनना है फरिश्ता, जो धरती पर पाँव न हो। आवाज़ से परे रहने की नेचर हो माना पहले दृष्टि फिर मुख से बोलेंगे। ऐसा बोलेंगे जो भूले नहीं। हमारे को सिर्फ प्लेन बुद्धि रखनी है तब ही बाबा हमारा रक्षक है।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मैं हूँ आत्मा शरीर से न्यारा... कितना अच्छा लगता है। अभी देखो यहाँ कितने क्लासेज़ वैरायटी क्लासेज़ मिलते हैं। हम सबसे बड़े से बड़ी भूल यह हुई जो हम अपने धर्म को ही भूल गये। गीता में भी है जब जब धर्मग्लानि होती है तब मैं आता हूँ। हम असुल देवता धर्म के थे, अब फिर से देवता बन रहे हैं। वन्डर है, बाबा स्मृति दिलाता है। स्मृति, वृत्ति ऐसी है जो ज़्यादा सोचने की ज़रूरत नहीं है। मैं कौन, मेरा कौन, मुझे बाबा क्या से क्या बनने के लिये कहता है! जैसे तुम बने हो ना वैसे बनाओ। बाप के समान खिदमदगार बनो। हम भी अपने आपसे पूछते हैं सारी लाइफ क्या है? बाबा के साथ रहे हैं। साकार में भी साथ रहे हैं, अव्यक्त हुआ है तो भी साथ ही हैं। वो छोड़ता ही नहीं है, हम फंसे रहें बाबा के साथ, ताकि परमधाम शान्तिधाम फिर सुखधाम...। परमधाम वासी बाबा मेरे तो पीछे हैं आपके तो सामने हैं। सुखधाम में ले जाने के लिये सुखधाम बना रहा है। अभी हर आत्मा सुख शान्ति प्रेम आनन्द खुशी में सम्पन्न बन रही है।

कोई भी बात अन्दर सोच में आई तो भारी हो जायेंगे, तो भारी नहीं होना है। करावनहार करा रहा है यह सोचो तो कभी भारी नहीं होंगे। ज्ञान योग क्या है, वो चेहरा बताता है। मीठा बनना है।

सब प्रॉब्लम्स बाबा को देकर, सदा खुश रहो

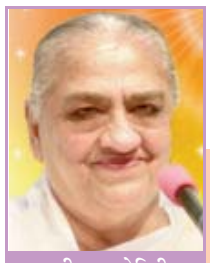

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

सभी बाबा की याद में ही खोये हुए हैं। सबके दिल में मीठा बाबा है। ऐसे है ना! क्योंकि मीठा बाबा नहीं दिल में होगा तो और क्या होगा? हमारे लिए दिल का दिलाराम तो मीठा बाबा ही है ना। हरेक यही कहता कि मेरा बाबा। सभी ने बाबा को मेरा बनाया है ना! जितना बाबा में मेरापन लायेंगे तो सब मैलापन निकल जायेगा। कितने लोग याद आते हैं, किसको करो याद, किसको भूल जाओ लेकिन मेरा बाबा तो मेरे दिल में है ही, याद भी है ही। तो बस जब हरेक के दिल में बाबा आ गया तो समझो विजयी बन गये। सारी मेहनत किसलिए की है? बाबा की याद सारा दिन रहे तो इसकी खुशी है कि बाबा ही दिल में है। गलती से कोई आ भी जाये तो उसको ठहरने नहीं देंगे। पाण्डवों का क्या हाल है? आपके दिल में भी मेरा बाबा ही है ना। बाबा में मेरापन आ गया ना। मेरा बाबा कहते हैं तो बाबा का परिचय याद आता है ना। है कौन? जिसको दुनिया याद करती है, दुनिया याद करती है लेकिन मेरे तो दिल में आ गया। मातायें, आ गया है ना! दिल का दिलाराम कौन? मेरा बाबा। तो बहुत अच्छा, आज चैतन्य में सम्मुख क्लास के भाई बहनों को देख खुशी हो रही है। नहीं तो टी.वी. में देखते ही रहते हैं। (हमें भी बहुत खुशी हो रही है) लेकिन यह खुशी सदा रहे, थोड़ी सी बात में खुशी नहीं चली जाये। कोई भी आके देखे, हमारी सभा में से सब खुशनसीब दिखाई देवें। सभी के दिल में उठे यह कौन? तो याद कौन आयेगा - मेरा बाबा। बस, मेरा बाबा के सिवाए और है कौन! अभी तो पक्का हो गया है ना। सभी मुस्कराते ऐसा हैं, जो सबकी ही शक्ल से दिखाई देता है कि कोई है इनके दिल में। जब दिल में यह आता है मेरा बाबा तो शक्ल ही बदल जाती है। सबकी शक्लें ऐसी मुस्कराती हैं जो फोटो निकालो तो बहुत अच्छा लगता है क्योंकि बाबा आ गया दिल में, कोई साधारण थोड़ेही है। भगवान आ गया मेरे दिल में! कम बात थोड़ेही है। तो सब खुश? खुशी कभी नहीं गंवाना क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति है ही खुशी। कोई भी बात हो जाये, अब दुनिया में रहते हैं तो दुनिया की बातें तो आयेंगी ही ना लेकिन हमारी दिल बाबा की है। यह पक्का है ना, तो अभी हाथ क्या उठवायें, दिल ही बोल रही है। तो खुशी कभी नहीं छोड़ना। हमेशा आपकी शक्ल ऐसे खुशी की दिखाई दे जो देखने से ही समझें यह कोई न्यारे दिखाई देते हैं। ऐसे हैं? तो हमें मिला कौन है! मेरा बाबा। तो सदा खुश, सदा। अभी भगवान मिला और क्या चाहिए? सब मिला ना। सबके चेहरे सदा खुश हैं ना कि कोई प्रॉब्लम है? आती है थोड़ी-थोड़ी प्रॉब्लम, लेकिन प्रॉब्लम जो है ना वो बाबा को दे दो, बस। देना तो सहज है, लेना थोड़ा मुश्किल है लेकिन देना तो सहज होता है ना। जब मेरा बाबा हो गया, तो सब मेरे में समा गये। सभी खुश, खुश हैं! सदा खुश या कभी-कभी? सदा। क्योंकि हमारे सिवाए और खुशी जाएगी कहाँ? उसका स्थान हम ही तो हैं। जिन्होंने खुशी को अपना बनाया तो हम खुश नहीं होंगे तो कौन होगा? प्रॉब्लम सारी बाबा को दे दी ना, तो सब खुश। अगर खुशी पूछना हो तो कहेंगे हमसे पूछो। तो खुश रहना है और खुशी बाँटनी है। अभी भी कोई-कोई खुश नहीं रहते हैं, दुनिया में कितने पड़े हैं। हाँ, ऐसे ही नहीं करते हैं पर कोशिश तो करते हैं ना। तो सभी खुश रहना और खुशी बाँटना।